अपने हृदयों की चौकसी करना

जब हम अपना आत्म-जीवन (self-life) प्रभु को दे देते हैं, तब हम परमेश्वर के वचन के द्वारा अपने हृदयों की सुरक्षा करने लगते हैं| हमें वचन सुनकर उसमें विश्वास मिलाना है (इब्रानियों ४:२) और उसका तुरन्त पालन करना है| तब यीशु मसीह की शक्ति के द्वारा हमें शैतान की चतुराई के सामने बहुत फायदा मिलेगा| जब हम मसीह में बने रहते हैं, हम विजयी होते हैं क्योंकि "...जो तुम में है, उस से जो संसार में है, बड़ा है"(१ यूहन्ना ४:४ब)|

हमें अपने हृदयों को स्वार्थी भावनाओं और आलसीपन, और दूसरों से अपनी तुलना करने से बचाना होगा|

"क्योंकि हमें यह साहस नहीं कि हम अपने आपको उनमें से ऐसे कितनों के साथ गिनें या उनसे अपने को मिलाएँ, जो अपनी प्रशंसा आप करते हैं, और अपने आप को आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से मिलान करके मूर्ख ठहरते हैं|" (२ कुरिन्थियों १०:१२)

इसके अलावा, हमें अपने दिलों को धार्मिक भावनात्मकता और अस्वस्थ भावनाओं से बचाना जरूरी है, जो हमें अनावश्यक रूप से विषयात्मक (subjective) बना देंगे और आसानी से जख्मी कर सकते हैं| हमारे प्राणों को परमेश्वर के वचन में श्रेणीगत उपदेश (categorical doctrine) के द्वारा सुरक्षित किया जाना आवश्यक है जिससे विषयात्मकता और जख्म गलत असर न पैदा कर सकें|